GOVERNMENT DEGREE COLLEGE
MADHUBAN,PAKARI DAYAL"EAST CHAMPARAN,, (BIHAR)
Dr. GAUTAM KUMAR (Department of Geography)
Email.ID – gyan000005@gmail.com Phone No- 09430509798/9682491741

B.A. II. Paper - III
Geography of India
Topic - Natural Vegetation.
(प्राकृतिक वनस्पति)

प्राकृतिक वनस्पति अर्थात वन (Forest) से आशय उन पेड़-पौधों, लताओं, झाड़ियों से है जो स्वतः प्राकृतिक रूप में उग आते हैं और स्वतः ही नष्ट हो जाते हैं। दूसरे शब्दों में न उन्हें कोई बोता है, न सिंचाई करता है और न कोई रख-रखाव ही करता है; वरन इनकी वृद्धि स्वयं होती जाती है। किसी भी देश के आर्थिक एवं सामाजिक विकास और समृद्धि में प्राकृतिक वनस्पति अथवा वनों का महत्वपूर्ण स्थान है। वन राष्ट्र की अमूल्य निधि होते हैं। प्रकृति ने भारत को वनों के रूप में पर्याप्त निःशुल्क उपहार प्रदान किया है। वनों से मानव का सम्बन्ध चिरप्राचीन है। इनसे हमें स्वादिष्ट फल, शीतल छाया, ईंधन, बहुमूल्य इमारती लकड़ी, जड़ी-बूटियाँ, गोंद, लाख, कत्था, बिरौजा तथा अन्य अनेक उपयोगी गौण उत्पाद प्राप्त होते हैं। भारत में 6.57 लाख हेक्टेयर (कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 19.40%) भूमि पर वनों का विस्तार है जो विश्व का केवल 0.5% से भी कम वन-क्षेत्र है और जिस पर विश्व की लगभग 16.7% जनसंख्या निर्भर है। अन्य देशों से तुलना करने पर ज्ञात होता है कि भारत धीरे-धीरे वन सम्पदा में निर्धन देशों की कोटि की ओर बढ़ रहा है। विश्व के विकसित देशों के अन्तर्गत जापान के 66.8%, कोरिया गणतन्त्र के 77.2%, ब्राजील के 65.2%, श्रीलंका के 27.8%, मेक्सिको के 29%, स्वीडन के 59.3%, स्विट्जरलैण्ड के 28.6% तथा जर्मनी के 30.8% भू-भाग पर वन क्षेत्र विस्तृत है। भारत अपने स्वार्थवश वनों का अन्धाधुन्ध विनाश कर रहा है इसी कारण 1997 तक जहाँ भारत का 22.9% भू-भाग वनाच्छादित था वह वर्तमान में सिकुड़कर 19.39% रह गया है, जिसके निरन्तर भयावह परिणाम पर्यावरण असंतुलन के रूप में हमारे सामने प्रकट हो रहे हैं।

प्राकृतिक वनस्पति को प्रभावित करने वाले घटक :-
(Factors Affecting Natural Vegetation)

पृथ्वी के सभी भागों में किसी न किसी प्रकार की वनस्पति अवश्य पायी जाती है; चाहे वह झाड़ियाँ या घास के रूप में अथवा सघन वनों के रूप में हो। जलवायु और मिट्टी के अनुसार ही वनस्पति उगती है। वनस्पति को प्रभावित करने वाले मुख्य घटक ये हैं। -

(क) तापमान
(ख) जलापूर्ति
(ग) प्रकाश
(घ) पवन और
(5.) मिट्टी है। यहाँ पर जलवायु के घटक (तापमान, वर्षा या जलापूर्ति, पवन, प्रकाश और मिट्टी) सबसे महत्वपूर्ण हैं।

GOVERNMENT DEGREE COLLEGE

MADHUBAN,PAKARI DAYAL"EAST CHAMPARAN,, (BIHAR)

Dr. GAUTAM KUMAR (Department of Geography)

Email.ID – gyan000005@gmail.comPhone No- 09430509798/9682491741

[क] : तापमान (Temperature) – तापमान और वनस्पति में गहरा सम्बन्ध पाया जाता है। वनस्पति के विकास के लिए कम से कम तीन महीने का तापमान 10° C से अधिक होना चाहिए। अतः जुलाई माह की 10°C की समताप रेखा उत्तरी गोलार्द्ध में वृक्ष सीमा बनाती है। यह टुन्ड्रा तथा टैगा क्षेत्रों की सीमा निर्धारित करती है। ध्रुवीय कम तापमान के निकटवर्ती क्षेत्र प्रायः वनस्पति शून्य होते हैं। उष्ण-कटिबंधों में अधिक ऊँचे तापमानों के कारण ऐसी वनस्पति पायी जाती है जिनके पत्तियाँ एवं जड़ें अधिक व गहरी होती हैं। शीत कटिबंधों में ऐसी वनस्पति पायी जाती है जो सामान्यतः छोटी-2 झाड़ियाँ (पौधे) और घास के रूप में फैली होती है। इनकी जड़ें बहुत छोटी और पतली होती हैं। झाड़ और लिचेन यहाँ के मुख्य वनस्पति हैं।

उष्ण कटिबंधीय चौड़ी पत्ती वाली वनस्पति एवं शीत कटिबंधीय शंकुधारी नुकीली पत्तियों वाली वनस्पति में अन्तर का मुख्य कारण तापमान की भिन्नता है।

[ख] जलापूर्ति (Water Supply) : तापमान के द्वारा वनस्पतियों की भिन्न-2 जातियाँ निश्चित होती हैं और जल के द्वारा उनकी विरलता या सघनता का निश्चय होता है। जहाँ जल की मात्रा अधिक होती है। वहाँ बड़े पत्तों वाले लहलहाते वृक्षों और हरी घास की प्रधानता रहती है अत्यधिक नम भागों में पाए जाने वाले पौधों को नम भूमि के पौधे (Hydrophytes) कहते हैं ऐसे पौधों के तने लम्बे और पतले, जड़ें छोटी पत्तियाँ चौड़ी और पतली होती हैं, लेकिन सहारा जैसी शुष्क भूमि में घास, कंटीले और कम पत्तीवाले वृक्ष पैदा होते हैं। शुष्क जलवायु के पौधों (Xerophytes) की जड़ें लम्बी होती हैं।

[ग] प्रकाश (Light) :- जल की भाँति प्रकाश भी वनस्पति की अनिवार्य आवश्यकता है। जहाँ कहीं प्रकाश कम रहता है वहाँ भोजन बनाने की प्रक्रिया में कमी हो जाने के कारण वनस्पति कम विकसित हो पाती है। पत्तियों का हरा रंग भी प्रकाश के कारण ही होता है। कम प्रकाश में पत्तियों में हरे रंग (Chlorophyll) का अभाव हो जाता है। प्रकाश व गैसों की प्रतिक्रिया द्वारा वृक्षों को ऊर्जा व शक्ति भी मिलती है। उपर्युक्त तीनों तत्व वनस्पति के अनिवार्य घटक हैं।

[घ] पवन – (Wind) – यह भी वनस्पतियों के विकास के लिए एक महत्वपूर्ण कारक है। कभी-कभी प्रचण्ड अथवा झुलसाने वाली उष्ण व शुष्क पवनें वनस्पति को हानि भी पहुँचाती हैं। पवनों का मुख्य प्रभाव वनस्पति में उपस्थित जल की मात्रा को कम करना है। वृक्षों के जल को उष्ण पवन उनकी पत्तियों द्वारा वाष्पीकरण से उड़ा ले जाता है।

[ड.] मिट्टी (Soil) :- वनस्पति के समुचित विकास में तापमान और जल के साथ-साथ मिट्टी की किस्म भी समान रूप से महत्वपूर्ण है। मिट्टी से ही वनस्पति को भोजन मिलता है। मिट्टी में मिले हुए अनेक प्रकार के

Dr. GAUTAM KUMAR (Department of Geography)
Email.ID – gyan000005@gmail.comPhone No- 09430509798/9682491741

रसायन, लवण, आदि जल में घुलकर वनस्पति को भोजन देते हैं। अधिक मात्रा में लवण तत्व वृक्ष के लिए विष का काम करता है एवं वहाँ वनस्पति पैदा नहीं होती। कणों की बनावट के अनुसार मिट्टी में जल की मात्रा कम या अधिक होती है। छोटे कणों वाली चिकनी मिट्टी में जल की मात्रा अधिक रहती है, लेकिन यदि मिट्टी के कण मोटे होते हैं तो भी मिट्टी में जल बहुत कम रुकता है। उपजाऊ मिट्टियों में सघन तथा अनुपजाऊ मिट्टियों में विरल वनस्पतियाँ उगती हैं।

भारतीय वनों के प्रकार (Types of Indian Forests) :-

भारत एक विशाल देश है जिसके भौतिक स्वरूप में अनेक विविधताएँ पाई जाती हैं। यहाँ की जलवायु और मिट्टी में भी अनेक असमानताएँ हैं। इन सबका सम्मिलित प्रभाव प्राकृतिक वनस्पति पर पड़ा है। यही कारण है कि यहाँ प्राकृतिक वनस्पति में भी विविधता एवं भिन्नता के दर्शन होते हैं। भारत में मुख्यतः निम्नलिखित प्रकार के वन पाए जाते हैं।

<1> उष्ण कटिबंधीय सदाबहार वन।
<2> उष्ण कटिबंधीय शुष्क पतझड़ वन।
<3> ,, ,, ,, सदाबहार वन।
<4> मरुस्थलीय एवं अर्द्ध मरुस्थलीय वन।
<5> पर्वतीय वन।
<6> डेल्टाई वन।
<7> नदी तट के वन।

[1] उष्ण कटिबंधीय सदाबहार वन :– इस प्रकार के वनों को वर्षा के आधार पर तीन उपवर्गों में बाँटा जा सकता है
<क> आर्द्र सदाबहार वन
<ख> ,, अर्द्ध सदाबहार वन, और
<ग> ,, पतझड़ वन या मानसूनी वन

[क] आर्द्र सदा बहार वन – जिन क्षेत्रों में वर्षा 300 Cm से अधिक होती है और शुष्ककाल बहुत छोटा होता है, वहाँ आर्द्र सदाबहार वन आते हैं। ये वन बहुत सघन होते हैं जिनमें वृक्षों की ऊँचाई सामान्यतः 45 मीटर होती है, परन्तु कुछ वृक्ष 60 मी॰ ऊँचाई तक के भी होते हैं। इनमें बेलों, अधिपादपों (एपीफाइट्स) बाँसों और फर्न की संख्या भी अधिक पाई जाती है। एक वर्ग Km क्षेत्रफल में ही यहाँ वृक्षों की अनेक किस्में पाई जाती हैं। पश्चिमी घाट के पर्वतीय क्षेत्रों पर ये वन 450-1,370 मीटर की ऊँचाई के बीच पाये जाते हैं। असम और अन्य उत्तर-पूर्वी राज्यों की पहाड़ियों पर, पूर्वी हिमालय के तराई क्षेत्र तथा अण्डमान व निकोबार द्वीप समूह में इसी प्रकार के वन उगते हैं। इन वनों में रोज वुड, एबोनी और आयरन-वुड आदि उपयोगी वृक्ष पाये जाते हैं।

GOVERNMENT DEGREE COLLEGE

MADHUBAN,PAKARI DAYAL"EAST CHAMPARAN,, (BIHAR)

Dr. GAUTAM KUMAR (Department of Geography)

Email.ID – gyan000005@gmail.comPhone No- 09430509798/9682491741

[ख] आर्द्र अर्द्ध-सदाबहार वन – इनका विस्तार 200 cm से 300 cm वर्षा के क्षेत्रों में पाया जाता है। ये वन ऊँचे और कम सघन वन हैं तथा इनमें सदाबहार वृक्षों के साथ पतझड़ वृक्ष भी उगते हैं। प्रायः इन वनों में एक ही जाति के वृक्षों के झुण्ड मिलते हैं। इन क्षेत्रों में शुष्क लकड़ी होती है।

विस्तार – वनों का विस्तार आर्द्र सदाबहार वृक्षों के किनारों पर विशेषकर पश्चिमी घाट, उत्तर-पूर्वी राज्यों तथा हिमालय की मध्य श्रेणियों में पाया जाता है।

मुख्य वृक्ष – यहाँ वृक्षों की ऊँचाई प्रायः 30 से 45 मीटर तक होती है। वृक्षों की लकड़ी काले रंग की तथा कठोर होती है। वृक्षों के नीचे झाड़ियों व पौधों की अधिकता पाई जाती है। इन वनों में रबड़, महोगनी, बाँस, ताड़, सिनकोना आदि के वृक्ष विशेष रूप में उगते हैं। औद्योगिक दृष्टि से यह वन उपयोगी माने जाते हैं।

[ग] आर्द्र पतझड़ वन या मानसूनी वन –

[illegible] – इनका विस्तार प्रायः 100 से 200 cm वर्षा वाले क्षेत्रों में पाया जाता है। ये वन पश्चिमी घाट, छोटा नागपुर के पठार, झारखण्ड, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, हिमालय की शिवालिक पहाड़ियों, भाबर, तराई तथा पूर्वी घाट के कुछ भागों में पाए जाते हैं। वर्षा की कमी के कारण इन वनों के वृक्ष ग्रीष्मकाल के आरम्भ में वाष्पीकरण से बचने के लिए अपनी पत्तियाँ गिरा देते हैं। अतः इन्हें पतझड़ वन या मानसूनी वन भी कहते हैं।

मुख्य वृक्ष – इन वनों चौड़ी पत्ती तथा टिकाऊ लकड़ी वाले वृक्ष अधिक उगते हैं। टिकाऊ लकड़ियों में साल, शीशम, सागौन, साखू, चन्दन, आम, हल्दू, महुआ, हर्रा-बहेड़ा, आँवला, पलास, कुसुम, कत्था पेड़ के तथा शहतूत के मुख्य हैं।

भारत में इस प्रकार के वन मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु, उड़ीसा, पश्चिमी बंगाल, झारखण्ड, बिहार, पंजाब, हरियाणा तथा उत्तर प्रदेश आदि राज्यों में फैले हुए हैं। इन वनों की लकड़ी व तेल, वार्निश, चमड़ा रंगने के उपयोगी पदार्थ भी प्राप्त होते हैं।

[2]- उष्ण कटिबन्धीय शुष्क एवं पतझड़ वन –

वर्षा – इस प्रकार के वनों का विस्तार उन भागों में जहाँ 75 से 125 cm के बीच वार्षिक वर्षा होती है। वर्षा की कमी के कारण इन वनों के वृक्ष भी ग्रीष्म ऋतु में अपनी पत्तियाँ गिरा देते हैं।

विस्तार – भारत में इस प्रकार के वनों का विस्तार लगभग 297 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल है।

मुख्य वृक्ष/वन – इन वनों के मुख्य वृक्ष महुआ, खैर, आम, बरगद, शीशम, कीकर, बबूल तथा हर्र आदि हैं।

GOVERNMENT DEGREE COLLEGE

MADHUBAN,PAKARI DAYAL"EAST CHAMPARAN,, (BIHAR)

Dr. GAUTAM KUMAR (Department of Geography)

Email.ID – gyan000005@gmail.comPhone No- 09430509798/9682491741

वितरण – ये वन पूर्वी राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, पश्चिमी उत्तर प्रदेश तथा दक्षिणी भारत के शुष्क भागों में उगते हैं। तराई प्रदेशों में सवाना घास, सबाई, मूँज, कांस व हाथी घास उगती है जिस पर कागज उद्योग आधारित है।

MAP → प्राकृतिक वनस्पति

[3] उष्ण कटिबंधीय शुष्क सदाबहार वन –

वर्षा – ये वन आन्ध्र प्रदेश और तमिलनाडु के 100 cm से कम वर्षा प्राप्त करने वाले पर्वतीय भागों में उगते हैं। सामान्यतः इनका विस्तार शिवराय, अन्नामलाई व पालनी की पहाड़ियों तथा उनके निकटवर्ती भागों में पाया जाता है।

प्रमुख वृक्ष – वनों के वृक्ष छोटे और कम सघन होते हैं। नीम, इमली, ताड़, पॉमिरा ताड़ और केजुरिना इन वनों के प्रमुख वृक्ष हैं। अनेक सदाबहार वन साल भर जो उगते हैं तथा वर्षभर हरे भरे रहते हैं। कहीं कहीं केवल पहाड़ी ढलानों में ये वहाँ बिखरे हुए पाए जाते हैं।

[4] मरुस्थलीय एवं अर्द्ध-मरुस्थलीय वन :-

ये 50 cm से कम वर्षा वाले भागों में पायी जाती है। यहाँ वृक्ष छोटी-छोटी झाड़ियों के रूप में होते हैं। सामान्यतः इनकी अधिकतम ऊँचाई 6 cm तक होता है। इनकी पत्तियाँ मोटी एवं काँटेदार होती हैं। इन वृक्षों की जड़ लम्बी,

वितरण – पश्चिमी राजस्थान, उत्तरी गुजरात एवं पश्चिमी घाट पर्वत का वृष्टि छाया प्रदेश।

मुख्य वृक्ष – खजूर, नागफनी, बबूल और खेजड़ा आदि हैं।

[5] पर्वतीय वन –

हिमालय पर्वत पर ऊँचाई के साथ-साथ तापमान एवं वर्षा में अन्तर उत्पन्न होता जाता है। अतः यहाँ ऊँचाई के अनुसार वृक्षों में भी भिन्नता होती जाती है। हिमालय पर्वत पर 1500 मीटर की ऊँचाई तक सदाबहार तथा पतझड़ वाले वन उगते हैं।

प्रमुख वृक्ष – जिनमें चीड़, ओक, देवदार, बर्च, एल्डर, पोपलर, एल्म तथा मैपिल के वृक्ष प्रमुख हैं। यहाँ कोणधारी वनों की प्रधानता है यहाँ वनों की ऊँचाई वाले लगभग 2500 से 3600 मीटर पाये जाते हैं। प्राकृतिक वनस्पति में काई तथा लिचेन की ही प्रधानता होती है। यातायात साधनों के अभाव तथा पर्वतों की दुर्गमता के कारण पर्वतीय वनों को पर्याप्त शोषण नहीं हो सका है।

[6] डेल्टाई वन –

नदियों के डेल्टाओं में विशेष प्रकार की वनस्पति उगती है; जिन्हें डेल्टाई या मैनग्रोव वन कहते हैं। इन डेल्टाओं में सागर का खारा जल प्रवेश कर जाता है। अतः इन भागों में ज्वारीय सदाबहार वन उगते हैं। इन वृक्षों की छाल नमकीन तथा लकड़ी कठोर होती है। इनकी छाल का उपयोग चमड़ा रंगने में किया

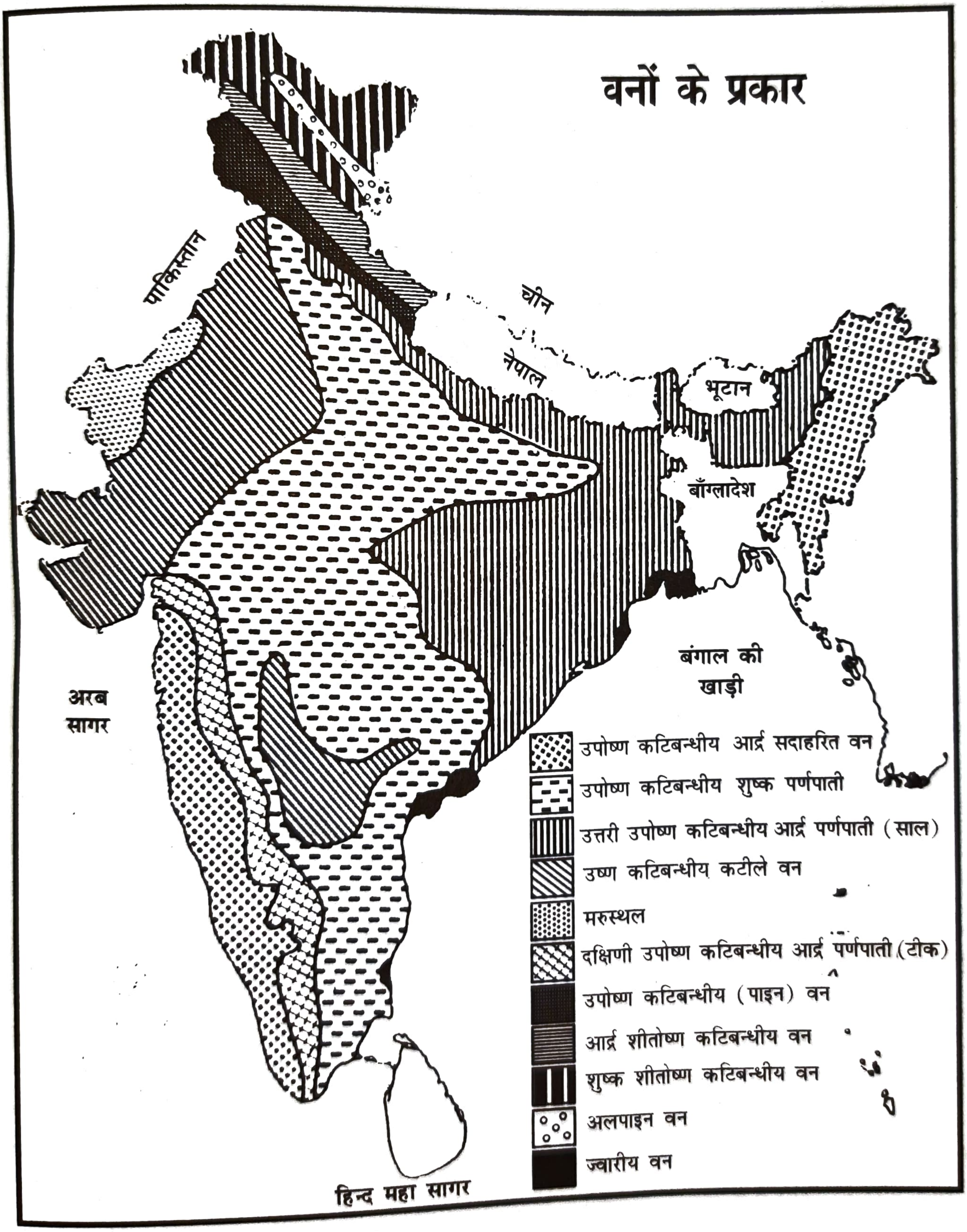
वनों के प्रकार
पाकिस्तान
चीन
नेपाल
भूटान
बाँग्लादेश
बंगाल की खाड़ी
अरब सागर
हिन्द महा सागर
उपोष्ण कटिबन्धीय आर्द्र सदाहरित वन
उपोष्ण कटिबन्धीय शुष्क पर्णपाती
उत्तरी उपोष्ण कटिबन्धीय आर्द्र पर्णपाती (साल)
उष्ण कटिबन्धीय कटीले वन
मरुस्थल
दक्षिणी उपोष्ण कटिबन्धीय आर्द्र पर्णपाती (टीक)
उपोष्ण कटिबन्धीय (पाइन) वन
आर्द्र शीतोष्ण कटिबन्धीय वन
शुष्क शीतोष्ण कटिबन्धीय वन
अलपाइन वन
ज्वारीय वन

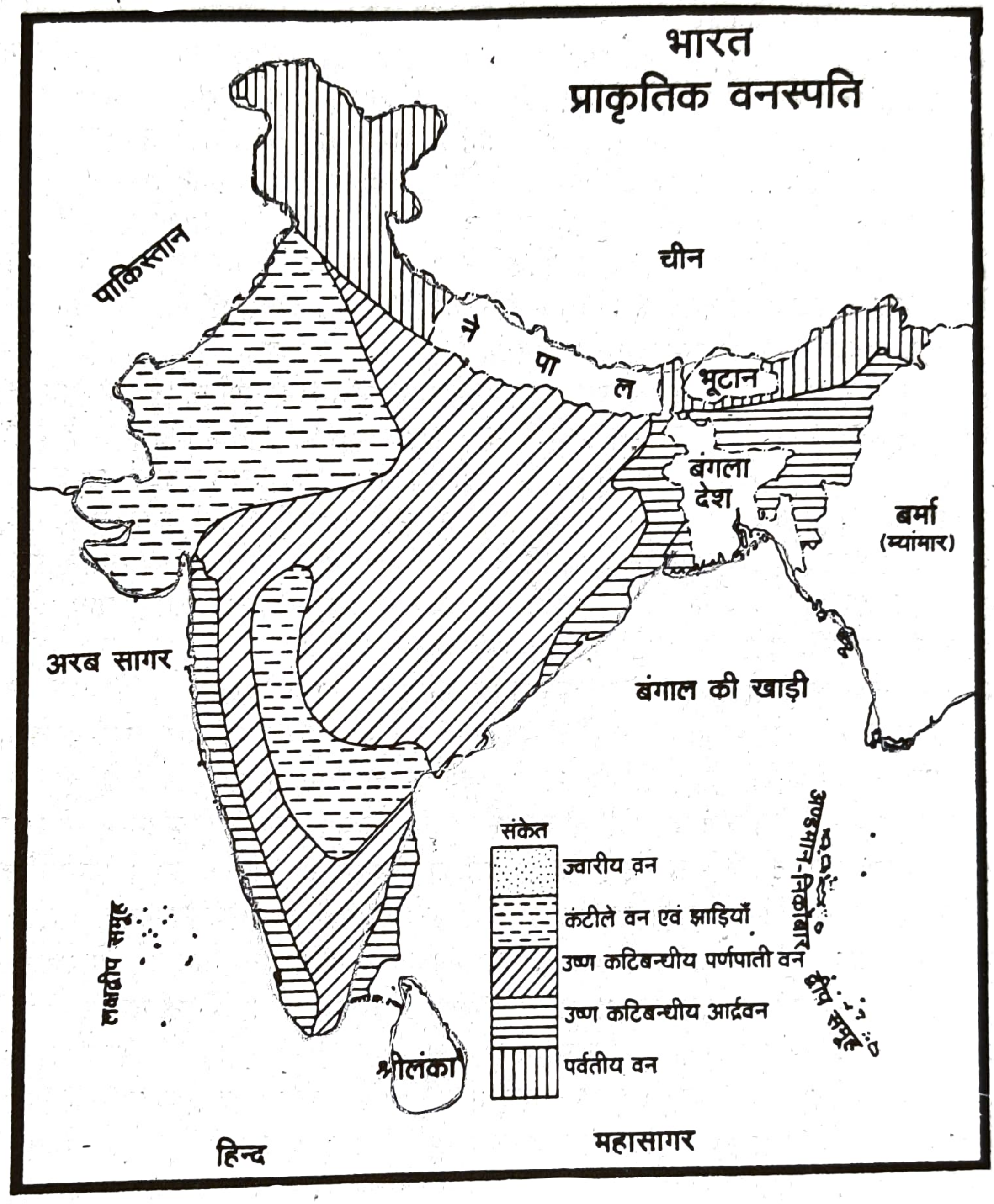
भारत
प्राकृतिक वनस्पति
पाकिस्तान
चीन
नेपाल
भूटान
बंगला देश
बर्मा (म्यांमार)
अरब सागर
बंगाल की खाड़ी
लक्षद्वीप समूह
अण्डमान-निकोबार द्वीप समूह
श्रीलंका
हिन्द
महासागर
संकेत
ज्वारीय वन
कंटीले वन एवं झाड़ियाँ
उष्ण कटिबन्धीय पर्णपाती वन
उष्ण कटिबन्धीय आर्द्रवन
पर्वतीय वन

GOVERNMENT DEGREE COLLEGE
MADHUBAN,PAKARI DAYAL"EAST CHAMPARAN,, (BIHAR)
Dr. GAUTAM KUMAR (Department of Geography)
Email.ID – gyan000005@gmail.comPhone No- 09430509798/9682491741

जाता है तथा कठोर लकड़ी है जल पोत एवं नावें बनाई जाती है। इन वनों के प्रमुख वृक्ष ताड़, नारियल, मैनग्रोव, गोरेन, नीपा, फानिक्स, तथा केजुरिना है। भारत में इस प्रकार के वन गंगा, ब्रह्मपुत्र, कृष्णा, कावेरी, तथा महानदी आदि नदियों के डेल्टाओं में उगते हैं। गंगा-ब्रह्मपुत्र के डेल्टा में सुन्दरी नामक वृक्ष अधिक उगता है। अतः इसे सुन्दर-वन का डेल्टा कहते हैं।

7. **[नदी तट के वन]** विशाल मैदान की नदियों के तटों पर खादर प्रदेश में बबूल, जामुन, शीशम, पाकड़ और तथा इमली के वृक्ष उगते हैं। नदियों के जल से इन्हें नमी प्राप्त रहती है। अतः ये वर्ष भर-हरे-भरे बने रहते हैं। ये वन कम सघन होते हैं। तथा इनमें उपयोगी वृक्ष हो पाए जाते हैं। इस प्रकार के वन पंजाब, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखण्ड तथा असम में अधिक उगते हैं। तराई क्षेत्र में भी ऐसे ही वनों की प्रधानता है।

वन संरक्षण के प्रमुख उपाय →

पर्यावरण के संरक्षणार्थ वनों का संरक्षण अत्यन्त आवश्यक प्रतीत होता है। वन संरक्षण हेतु देश में संशोधित राष्ट्रीय वन नीति 1988 में लागू की गई है। इस वन नीति के प्रमुख लक्ष्य पारिस्थितिकीय सन्तुलन के संरक्षण और पुनः स्थापन द्वारा पर्यावरण स्थायित्व को बनाए रखना है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु वन संरक्षण के लिए निम्नलिखित उपाय आवश्यक है

(1). व्यापक वृक्षारोपण और सामाजिक वानिकी कार्यक्रमों के द्वारा वन और वृक्ष के आच्छादन में महत्वपूर्ण बढ़ोत्तरी की जाए

(2). वन उत्पादों के उचित उपयोग को बढ़ावा देना और लकड़ी के अनुकूलन विकल्पों की खोज की जाए

(3). वनों पर पड़ रहे दबाव को न्यूनतम करने के लिए जन-साधारण, विशेषकर महिलाओं का अधिकतम सहयोग प्राप्त करने के लिए प्रेरित करना।

(4). नदियों, झीलों और जलाशयों के जल-ग्रहण क्षेत्रों में भूमि कटाव और वनों के क्षरण पर नियंत्रण किया जाए।

(5). वन संरक्षण और प्रबन्धन हेतु ग्रामीण समितियों का गठन किया जाए।

(6). आदिवासी बहुल क्षेत्रों में नष्ट हो चुके वनों को पुनः हरा-भरा करने के लिए विशेष प्राथमिक रोजगार योजना के माध्यम से वनों का पुनर्जीवित किया जाए

(7). प्राकृतिक और मानव द्वारा लगी वनों की आग (दावानल) पर नियंत्रण करना तथा वनों में आग लगने की घटनाओं में कमी लाकर वनों की उत्पादन क्षमता में वृद्धि करना।

(8). लोक नीति, कानून और अनुपयुक्त अन्य प्रकार की भूमि पर इनकी प्रभाव के अनुकूल प्रजातियों की वनस्पति का विस्तार करना भी वन संरक्षण के

GOVERNMENT DEGREE COLLEGE

MADHUBAN,PAKARI DAYAL"EAST CHAMPARAN,, (BIHAR)

Dr. GAUTAM KUMAR (Department of Geography)

Email.ID – gyan000005@gmail.comPhone No- 09430509798/9682491741

में सहायक कदम होगा।

वास्तव में वन सम्पदा हमारे लिए प्रकृति का अमूल्य वरदान है, अतः हमें इस सम्पत्ति का आज ही काम में लेना चाहिए उसके मूल को कभी भी खत्म नहीं करना चाहिए तभी हम आज के भयावह पर्यावरण असन्तुलन से राहत पा सकते हैं।

प्र२५.

Q1 वन संरक्षण का क्या अर्थ है? वन संरक्षण की आवश्यकता के प्रमुख कारण बताइए।

Q2. वन संरक्षण के प्रमुख उपाय बताइए?

(OR)

भारत में वन संसाधनों का महत्व बताइए?

12 April, 2019

Dr. Gautam Kumar

Patliputra University Patna (P.U.)